मद्हे रसूल (स०) व इमाम सादिक़ (अ०)

बिन्ते ज़हरा नक़वी 'नदल हिन्दी' साहेबा

फिर हो रही है सादिक़े आले नबी (अ०) की बात
आलम में आम हो गई है रौशनी की बात
आले नबी की बात में है ज़िन्दगी की बात
और उनको भूल जाओ तो है मौत ही की बात
यह है ख़ुदी की बात कि मद्हे इमाम कर
ग़ैरों का तज़किरा है फक़त बेख़ुदी की बात
मैं हूँ असीरे उलफ़ते औलादे मुस्तफ़ा (स०)
आज़ादी जिसको कहते हो वह है कभी की बात
मस्ऊल अब सवाल पे नाराज़ होते हैं
डरते हैं बढ़ न जाए कहीं आगही की बात
मौलाए काएनात हैं वह, इतना है सबब
छाई है कुल ज़माने पे मौला अली (अ०) की बात
बाक़िर (अ०) के घर से लिपटी हैं रौशन ज़मीरियाँ
जिसको भी देखो करता है तक़दीर ही की बात
जाफ़र (अ०) ने लो उलूम के दरया बहा दिये
सच में इसी को कहते हैं दरया दिली की बात
बीमारे इश्क़े आले नबी हो के मर ''नदा''
इसमें छुपी हुई है तेरी ज़िन्दगी की बात

□□□

सरकारे दो जहाँ की मुहब्बत के नाम पर
आपस के इख़्तेलाफ को कुर्बान कीजिये।
''अल्लामा नज्म आफ़न्दी''

मेरे सरकार है दुनिया की इज़्ज़त आपके दर से
फ़लक ने भीक में पाई है रफ़अत आपके दर से
नहीं है बे सबब दुनिया को उलफ़त आपके दर से
है वाबस्ता ज़माने की ज़रूरत आपके दर से
मरीज़ाने विलाए मुर्तज़ा बेहद तवाना हैं
अजब अन्दाज़ से बटती है सेहत आपके दर से
हमें 'ला तक़नतू मिर्रह्मतिल्लाह'' पर अक़ीदा है
कनीज़ों को है उम्मीदे शिफ़ाअत आपके दर से
अदु–ए–जाँ से भी हमदर्दियाँ क्या ख़ूब सीरत है
जहाँ ले दर्से मेयारे शराफत आपके दर से
जिन्हें जाना है जन्नत आएं वह सब आपके दर तक
कि देखा जा रहा है बाबे जन्नत आपके दर से
यही लगता है जैसे दौलते कौनैन पाई है
बहुत ही ख़ुश हैं पाबन्दे मुहब्बत आपके दर से
हैं सरदार जवानाने जिनाँ जब आपके घर में
तो फिर बेशक मिलेगी सबको जन्नत आपके दर से
ख़ुदा रक्खे दरे जूदो करम है आप ही का दर
वह काफ़िर है जिसे होए शिकायत आपके दर से
जिसे भी आपके दर से मुहब्बत है वह ज़िन्दा है
वह है मुर्दा जिसे भी अदावत है आपके दर से
फसादो इन्तेशारो तफ़रक़ा की नज़र थी दुनिया
ज़माने को मिला पैग़ामे वहदत आपके दर से
''नदल हिन्दी'' सवाली है तो बेशक आपके दर की
उसे मिलता ही है हसबे ज़रूरत आपके दर से

□□□